अवधविलास रामायण

जिसमें

रामचन्द्रकी सम्पूर्ण कथा क्रमसे ख्याल इत्यादि अनेक रागोंमें वर्णित है जिसके पढ़ने से चित्तकी शुद्धि होती है और सम्पूर्ण दुरावृत्ति दूर हो जाती है अन्तमें कैवल्यपद प्राप्त होता है ॥

जिसको

[illegible] ग्वालियर के रहनेवाले बड़े परिश्रम से सज्जनों के चित्त विनोदार्थ निर्मित किया है

प्रथम वार

[illegible]

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
एप्रिल सन् १८९४ ई० ॥